PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

वाक्य विचार

- वाक्य सार्थक शब्दों का समूह है, जिससें वक्ता के कथन का पूरा अर्थ समझ में आ जाता है।
- वह शब्द समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाये, 'वाक्य' कहलाता है।

जैसे -

विजय खेल रहा है

प्रिया नाच रही है।

वाक्य के भाग

वाक्य के दो भेद होते है-

(1)उद्देश्य (Subject)

(2)विद्येय (Predicate)

1. उद्देश्य (Subject):- वाक्य का वह भाग है, जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं।

जैसे-

प्रिया किताब पढ़ती है।

दिलीप दौड़ता है।

- इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है

जैसे -

'परिश्रम करने वाला व्यक्ति' सदा सफल होता है। इस वाक्य में कर्ता का विस्तार (व्यक्ति) 'परिश्रम करने वाला' है।

- उद्देश्य के रूप में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण क्रियाद्योतक और वाक्यांश आदि आते हैं।

जैसे -

1. संज्ञा- पंकज गेंद खेलता है।
2. सर्वनाम- वह घर जाता है।
3. विशेषण- बुद्धिमान सदा सच बोलते हैं।
4. क्रिया-विशेषण- पीछे मत देखो।
5. क्रियार्थक संज्ञा- तैरना एक अच्छा व्यायाम है।
6. वाक्यांश- भाग्य के भरोसे बैठे रहना कायरों का काम है।
7. कृदन्त- लकड़हारा लकड़ी बेचता है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

उद्देश्य के भाग (2 भाग)

(i) कर्ता

(ii) कर्ता का विशेषण या कर्ता से संबंधित शब्द।

उद्देश्य का विस्तार

उद्देश्य की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्द या शब्दहैं। समूह को उद्देश्य का विस्तार कहते- उद्देश्य के विस्तारक शब्द विशेषण, सम्बन्धवाचक, समानाधिकरण, क्रियाद्योतक और वाक्यांश आदि होते हैं।

जैसे -

1. विशेषण- 'दुष्ट' लड़के ऊधम मचाते हैं।
2. सम्बन्धकारक- 'मोहन का' घोड़ा घास खाता है।
3. विशेषणवत्प्रयुक्त शब्द- 'सोये हुए' शेर को जगाना अच्छा नहीं होता।
4. क्रियाद्योतक- 'खाया मुँह और नहाया बदन' छिपता नहीं है।

'दौड़ता हुआ' बालक गिर गया।

5. वाक्यांश- 'दिन भर का थका हुआ' लड़का लेटते ही सो गया।
6. प्रश्न से- 'कैसा' काम होता है ?
7. सम्बोधन- 'हे राम!' तुम क्या कर रहे हो ?

- विशेष- सम्बोधन का प्रयोग ऐसे वाक्यों में भी होता है, जहाँ वाक्य का कर्त्ता और सम्बोधित व्यक्ति भिन्न भिन्न होते हैं।-जैसे- हे गरुड़ ! राम की माया ही ऐसी है इस वाक्य में गरुड़ तथा वाक्य ! का कर्त्ता 'माया' भिन्न भिन्न हैं। ऐसे वाक्यों में सम्बोधन के बाद-'तुम सुनो' आदि छिपा रहता है, ये सम्बोधन 'तू', 'तुम' अथवा 'आप' के विस्तार होते हैं।

2. विद्येय (Predicate):- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे विद्येय कहते है।

जैसे -

पूनम किताब पढ़ती है।

इस वाक्य में 'किताब पढ़ती' है विधेय है क्योंकि पूनम के विषय में कहा गया है।(उद्देश्य)

- वाक्य के कर्ता को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ भी शेष रह जाता है (उद्देश्य), वह विधेय कहलाता है।

इसके अंतर्गत विधेय का विस्तार आता है। जैसे लंबे बालों वाली लड़की-लंबे -'अभीअभी एक बच्चे - के साथ दौड़ते हुए उधर गई' ।

इस वाक्य में विधेय का विस्तार (गई)'अभीएक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर अभी-' है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- विशेषआज्ञासूचक वाक्यों में विद्येय तो होता है किन्तु उद्दे-श्य छिपा होता है।

जैसे -

वहाँ जाओ।

खड़े हो जाओ।

इन दोनों वाक्यों में जिसके लिए आज्ञा दी गयी है वह उद्देश्य अर्थात 'वहाँ न जाने वाला '(तुम (और'खड़े हो जाओ' (तुम या आपअर्थात उद्देश्य दिखाई नही पड़ता वरन छिपा हुआ है। (

विधेय के भाग-

विधेय के छः भाग होते है-

(i) क्रिया

(ii) क्रिया के विशेषण

(iii) कर्म

(iv) कर्म के विशेषण या कर्म से संबंधित शब्द

(v) पूरक

(vi)पूरक के विशेषण।

वाक्य के भेद

(1) वाक्य के भेदरचना के आधार पर -

रचना के आधार पर 3 भेद होते है-

(i)साधरण वाक्य या सरल वाक्य (Simple Sentence)

(ii)मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)

(iii)संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

(i) साधरण वाक्य या सरल वाक्य:-जिन वाक्य में एक ही क्रिया होती है, और एक कर्ता होता है, वे साधारण वाक्य कहलाते है।

इसमें एक 'उद्देश्य' और एक 'विधेय' रहते हैं।

जैसे -

'बिजली चमकती है'

'पानी बरसा' ।

इन वाक्यों में एकएक उद्देश्य-, अर्थात कर्ता और विधेय, अर्थात क्रिया है। अतः, ये साधारण या सरल वाक्य हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(ii)मिश्रित वाक्य:-जिस वाक्य में एक से अधिक वाक्य मिले हों किन्तु एक प्रधान उपवाक्य तथा शेष आश्रित उपवाक्य हों, मिश्रित वाक्य कहलाता है।

- जब दो ऐसे वाक्य मिलें जिनमें एक मुख्य उपवाक्य (Principal Clause) तथा एक गौण अथवा आश्रित उपवाक्य (Subordinate Clause) हो, तब मिश्र वाक्य बनता है।

जैसे-

मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत जीतेगा।

सफल वही होता है जो परिश्रम करता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मेरा दृढ़ विश्वास है कि' तथा 'सफल वही होता है' मुख्य उपवाक्य हैं और 'भारत जीतेगा' तथा 'जो परिश्रम करता है' गौण उपवाक्य। इसलिए ये मिश्र वाक्य हैं।

- जिन वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य हों तथा जो (गौण) उपवाक्य हो और अन्य आश्रित (मुख्य) आपस में'कि'; 'जो'; 'क्योंकि'; 'जितना'; 'उतना'; 'जैसा'; 'वैसा'; 'जब'; 'तब'; 'जहाँ'; 'वहाँ'; 'जिधर'; 'उधर'; 'अगरयदि/'; 'तो'; 'यद्यपि'; 'तथापि'; आदि से मिश्रित हों उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। (जुले-मिले)
- इनमे एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती है।

जैसे -

मैं जनता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते।

जो लड़का कमरे में बैठा है वह मेरा भाई है।

यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे।

- 'मिश्र वाक्य' के 'मुख्य उद्देश्य' और 'मुख्य विधेय' से जो वाक्य बनता है, उसे 'मुख्य उपवाक्य' और दूसरे वाक्यों को आश्रित उपवाक्य' कहते हैं। पहले को 'मुख्य वाक्य' और दूसरे को 'सहायक वाक्य' भी कहते हैं। सहायक वाक्य अपने में पूर्ण या सार्थक नहीं होते, पर मुख्य वाक्य के साथ आने पर उनका अर्थ निकलता हैं।

(iii)संयुक्त वाक्य :-जिस वाक्य में दो या दो से अधिक उपवाक्य मिले हों, परन्तु सभी वाक्य प्रधान हो तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते है।

जैसे -

वह सुबह गया और शाम को लौट आया।

प्रिय बोलो पर असत्य नहीं।

उसने बहुत परिश्रम किया किन्तु सफलता नहीं मिली।

- संयुक्त वाक्य उस वाक्यसमूह को कहते हैं-, जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य अथवा मिश्र वाक्य अव्ययों द्वारा संयुक्त हों।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

जैसे -'मैं रोटी खाकर लेटा कि पेट में दर्द होने लगा, और दर्द इतना बढ़ा कि तुरन्त डॉक्टर को बुलाना पड़ा।' इस लम्बे वाक्य में संयोजक 'और' है, जिसके द्वारा दो मिश्र वाक्यों को मिलाकर संयुक्त वाक्य बनाया गया।

(2) वाक्य के भेदअर्थ के आधार पर -

अर्थ के आधार पर वाक्य मुख्य रूप से आठ प्रकार के होते है-

(i) सरल वाक्य विधानवाचक/विधिवाचक/(Affirmative/Assertive Sentence)

(ii) निषेधात्मक वाक्य (Negative Sentence)

(iii) प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative Sentence)

(iv) आज्ञावाचक वाक्य (Imperative Sentence)

(v) संकेतवाचक वाक्य (Conditional Sentence)

(vi) विस्मयादिबोधक वाक्य (Exclamatory Sentence)

(vii) विधानवाचक वाक्य (Assertive Sentence)

(viii) इच्छावाचक वाक्य (Optative Sentence)

(i)विधिवाचक:-वे वाक्य जिनमे कोई बात साधरण ढंग से कही जाती है, सरल वाक्य कहलाते है।

जैसे-

साधारण वाक्य - प्रिया गाँव मे रहती है।

मिश्र वाक्य - मैं खाना खा चुका था, तब वह आया।

संयुक्त वाक्य - मैंने खाना खाया और मेरी भूख मिट गयी।

(ii)निषेधात्मक वाक्य:-जिन वाक्यों में किसी काम के न होने या न करने का बोध हो उन्हें निषेधात्मक वाक्य कहते है।

जैसे -

साधारण वाक्य – राधा ने मेरी सहायता नहीं की।

मिश्र वाक्य – मैंने खाना नहीं खाया, इसलिए मैंने शराब नहीं पी।

संयुक्त वाक्य – मैंने भोजन नहीं किया और इसलिए मेरी भूख नहीं मिटी।

(iii)प्रश्नवाचक वाक्य:-वे वाक्य जिनमें प्रश्न पूछने का भाव प्रकट हो, प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते है।

जैसे -

साधारण वाक्य – अंजली किस गाँव मे रहती है।

मिश्र वाक्य – क्या वह जानती है कि किरन कब आयेगी।

संयुक्त वाक्य – पंकज कब आया और कब चला गया।

(iv) आज्ञावाचक वाक्य :-जिन वाक्यों से आज्ञा प्रार्थना, उपदेश आदि का ज्ञान होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे –

साधारण वाक्य – तुम यहाँ से जाओ।

मिश्र वाक्य – जो काम तुमको कहा गया है, उसे पूरा करो।

संयुक्त वाक्य – हल्ला मत मचाओ और पढ़ने को बैठो।

(v) संदेहवाचक वाक्य:- जिन वाक्यों चसे संदेह या अनिश्चय की कोई बात पता चले, वहां संकेतवाचक होता है।

जैसे –

साधारण वाक्य – तुमने सुना होगा।

मिश्र वाक्य – जो साड़ी तुमने दी है, वह राधा की होगी।

संयुक्त वाक्य – वह यहाँ से चला गया होगा और साहिल के वहाँ से रवाना होगा।

(vi)विस्मयादिबोधक वाक्य:-जिन वाक्यों में आश्चर्य, शोक, घृणा आदि का भाव ज्ञात हो उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते है।

जैसे –

साधारण वाक्य – ओह बेचारा मारा गया, लल्लू।

संयुक्त वाक्य – शाबाश तुमने अच्छा खेल दिखाया और वह छिः छिः।

(vii) संकेतवाचक वाक्य:- जिन वाक्यों से दो कार्यों का होना पाया जाए और उनमें एक कार्य का होना दूसरे कार्य पर निर्भर हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते है।

जैसे –

यदि रात हो गयी तो मैं तुम्हारे घर नहीं आ पाऊगां।

(viii) इच्छावाचक वाक्य:- जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष एवं शुभकामना आदि का ज्ञान होता है, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते है।

जैसे –

ईश्वर तुम्हे विजयी बनाए।

भगवान करे वो तुम्हे मिल जाए।

वाक्य के अनिवार्य तत्व(6 तत्व)

(1) सार्थकता

(2) योग्यता

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(3) आकांक्षा

(4) निकटता

(5) क्रम

(6) अन्वय

(1) सार्थकता- सार्थकता वाक्य का प्रमुख गुण है। इसके लिए आवश्यक है कि वाक्य में सार्थक शब्दों का ही प्रयोग हो, तभी वाक्य अर्थ व भाव निकालने में सक्षम होगा।

जैसे-

राम रोटी पीता है।

यहाँ 'रोटी पीना' सार्थकता का बोध नहीं कराता, क्योंकि रोटी खाई जाती है। सार्थकता की दृष्टि से यह वाक्य अशुद्ध माना जाएगा।

सार्थकता की दृष्टि से सही वाक्य होगा- राम रोटी खाता है।

(2) योग्यता – वाक्य मे सार्थक शब्दो के साथ -साथ उन शब्दो मे मिलती हुई योग्यता होना भी अनिवार्य है। ताकि अनुकूल भाव उत्पन्न हो।

जैसे-

हिरण उड़ता है।

यहाँ पर हिरण और उड़ने की परम्पर योग्यता नहीं है, अतः यह वाक्य अशुद्ध है। यहाँ पर उड़ता के स्थान पर चलता या दौड़ता लिखें तो वाक्य शुद्ध हो जाएगा।

(3) आकांक्षा- आकांक्षा का अर्थ है - इच्छा। वाक्य अपने आप मे पूरा होना चाहिए उसमें किसी ऐसे शब्द की कमी नहीं होनी चाहिए जिसके कारण अर्थ की अभिव्यक्ति में बाधा हो।

जैसे -

राम पत्र लिखता है।

(4) निकटता- बोलते तथा लिखते समय वाक्य के शब्दों में परस्पर निकटता का होना बहुत आवश्यक है। रूक-रूक कर बोले या लिखे गए शब्द वाक्य नहीं बनाते।

जैसे -

गंगा .....पश्चिम.....

से पूरब.....

की ओर बहती है।

घेरे के अन्दर पदों के बीच की दूरी और समयान्तराल असमान होने के कारण वे अर्थग्रहण खो - देते हैं; जबकि नीचे उन्हीं पदों को समान दूरी और प्रवाह में रखने के कारण वे पूर्ण अर्थ दे रहे हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

अतएव, वाक्य को स्वाभाविक एवं आवश्यक बलाघात आदि के साथ बोलना पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है।

(5) क्रम - क्रम से तात्पर्य है पदक्रम। सार्थक शब्दों को भाषा के नियमों के -अनुरूप क्रम में रखना चाहिए। वाक्य में शब्दों के अनुकूल क्रम के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

जैसे-

नाव में नदी है।

इस वाक्य में सभी शब्द सार्थक हैं, फिर भी क्रम के अभाव में वाक्य गलत है। सही क्रम करने पर नदी में नाव है वाक्य बन जाता है, जो शुद्ध है।

(6) अन्वय - अन्वय का अर्थ है कि पदों में व्याकरण की दृष्टि से लिंग, पुरुष, वचन, कारक आदि का सामंजस्य होना चाहिए। अन्वय के अभाव में भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः अन्वय भी वाक्य का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

जैसे- राधेलाल का लड़का का हाथ में बन्दूक था।

इस वाक्य में भाव तो स्पष्ट है लेकिन व्याकरणिक सामंजस्य नहीं है। अतः यह वाक्य अशुद्ध है। यदि इसे राधेलाल के लड़के के हाथ में बन्दूक थी, कहें तो वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध होगा।

वाक्य विग्रह (Analysis)

- वाक्य के विभिन्न अंगों को अलग-अलग करना ही वाक्य-विग्रह (वाक्य विभाजन या वाक्य विश्लेषण) कहलाता है।
- सरल वाक्य का विग्रह करने पर एक उद्देश्य + एक विद्येय मिलता है।
- संयुक्त वाक्य का विग्रह करने पर दो स्वतंत्र उपवाक्य मिलते है।
- मिश्र वाक्य का विग्रह करने पर दो अपूर्ण उपवाक्य मिलते है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090